समझके आपमें खुदको निराली शान पैदा कर ॥ ५ ॥
तू खाकी है न आबी है आतशी है न बादी है ॥
तू रूह पाक है बेशक तू इत्मीनान पैदा कर ॥ ६ ॥
न्यायमत रखतो नफ़रत मिटादे एक दम दिलसे ॥
हटा अज्ञान का परदा ज़रा बिज्ञान पैदा कर ॥ ७ ॥

२

नोट—मई सन् १६१६ में लाला फतेहचन्द जैन रईस हिसार ने हिसार में पूजा (वेदी प्रतिष्ठा) करवाई थी—उस अवसर पर पंडित माणिकचन्द जी (न्याया चार्य्य मोरेना) पंडित मक्खन लाल जी शास्त्री (वादीभ केसरी न्याया लकार) ब्रह्मचारी शीतल प्रसाद जी—बाबा भागीरत दास जी त्यागी—पंडित गोरीलाल जी शास्त्री दहली—पधारे थे—इस मौक़े पर समस्त आर्य्य समाज—अहले इस्लाम सनातन धर्मी व ईसाई साहेबान को एक महीने पहले नोटिस दिया गया था कि तीन दिन तक मूर्ति पूजन व आवागवन व कर्त्ता खंडन पर न्याय पूर्वक वाद विवाद किया जावेगा—सोही सब समाजों के पण्डित व मोलवी व पादरी साहेबान आए थे और नियमानुसार वाद विवाद हुवा था और जैनमत की तरफ से सबके सन्तोषजनक उत्तर दिये गए थे—इस अवसर पर हर एक विषय का क़सीदा भी बनाकर सभा में सुनाया गया था—यह कसीदा मूर्ति मंडन के वाद विवाद के दिन सुनाया गया था—सभा का इन्तज़ाम राय साहेब लाला फूलचन्द जी जैन एकज़ेक्टिव इंजीनियर नहर की निगरानी में हुवा था—

चाल—कहां लेजाऊं दिल दोनो जहां में इसकी मुशकिल है ॥

जहांके काम बतलाने का सामां एक मूरत है ॥
ग़रज़ मतलब बरारी की नहीं कोई और सूरत है ॥ १ ॥
शकल सूरत शबीःह तसवीर फ़ोटो अक्स कुछ कहलो ॥
यह सारे नाम हैं उसके कि जिसका नाम मूरत है ॥ २ ॥

किताबों में यही मूरत अगर हरफ़ों की सूरत है ॥
तो उक्लेदसमें यह लाइन की और नुक्ते की मूरत है ॥ ३ ॥
कहीं एबी-कहीं अ आ कहीं पर अल्फ़ बे सारे ॥
यह समझानेके ज़रिये हैं यह बतलानेकी सूरत है ॥ ४ ॥
जरा चलकर मदर्से में हिन्द का देखलो नक़शा ॥
कहीं शहरों का नुक्ता है कहीं दरियाकी मूरत है ॥ ५ ॥
नज़र जिसदम पड़े साधू सती गणिकाके फ़ोटो पर ॥
असर दिलपर वही होता है जैसी जिसकी मूरत है ॥ ६ ॥
जैन साइन्समें अस्थापना निक्षेप कहते हैं ॥
इसी बुनियाद पर जिन मंदिरों में जिनकी मूरत है ॥ ७ ॥
देख लीजे ग़ौर करके यह मूरत शान्त मूरत है ॥
यह इक बैरागता सम्वेगता शान्तिकी सूरत है ॥ ८ ॥
रहनुमा जग हितैषीकी हमें ताज़ीम लाज़िम है ॥
अदब ताज़ीम करनेकी यही तो एक सूरत है ॥ ९ ॥
खिंचे नहीं दायरा हरगिज़ बिना नुक्ते की मूरतके ॥
ध्यानके दायरे के वास्ते भगवत की मूरत है ॥ १० ॥
शहनशाह जार्जपंजम हिन्द में तशरीफ़ जब लाए ।
झुका दिया सर जहां मल्का महाराणी की मूरत है ॥ ११ ॥
अदबसे जाके बोसा देते हैं मक्के मदीने में ॥
वहां असवद की मूरत है यहां भगवत की मूरत है ॥ १२ ॥
आर्य्य मंदिरों में भी शबीह दयानंद स्वामी की ॥

१ ईश्वर—२ फोटो तसवीर

लगी है सरसे ऊपर यह अदब करनेकी सूरत है ॥ १३ ॥
अमानत ऐसा फरमाते हैं अपना दिल जमाने को ॥
खुदाकी यादका बहतर तरीक़ा बुतकी मूरत है ॥ १४ ॥
चांदमारी में भी दीवार पर नुक्ता लगाते हैं ॥
निशाने की निगाह ठैरानेकी यह एक सूरत है ॥ १५ ॥
देखलो जाके गिरजामें रखी है स्लीब की मूरत ॥
यह सब ताज़ीम के रस्ते अदब करनेकी सूरत है ॥ १६ ॥
सभी ताज़ीम करते हैं हुसैन हज़रतके लाशेको ॥
ताजिया जिसको कहते हैं जनाज़े[१] की वह मूरत है ॥ १७ ॥
शाह फ़र्ज़ी फील घोड़ा यह गो लकड़ीके टुकड़े हैं ॥
मगर शतरंज को बाज़ी लगाने की तो सूरत है ॥ १८ ॥
सलामी फौज देती है झुका सर बोसा देते हैं ॥
जहांपर तख्त शाही या ताज शाही की मूरत है ॥ १९ ॥
सभी मंदिर शिवालय मसाजिदें क़ब्रें बुजुर्गों की ॥
हैं क्यों ताज़ीम के क़ाबिल वह इक मिट्टी की मूरत है ॥२०॥
लीडरोंके शहनशाहोंके राजोंके गवरनरके ॥
हजारों बुत बने हैं दर असल मिट्टी की मूरत है ॥ २१ ॥
अदब करते हैं सब इनका कोई तोहीन[२] कर देखे ॥
सज़ा पाए अदालतसे गो बुत मिट्टी की मूरत है ॥ २२ ॥
हज़ारों और भी मूरत नज़र आती हैं दुनिया में ॥
सभी अच्छी बुरी मूरत हैं जैसी जिसकी सूरत है ॥ २३ ॥

---

१ जनाजा——२ बे अदबी—

जुदागाना असर दिलपर हरइक मूरत का होता है ।
भला फिर किस तरह कहते हो यह नाकाम मूरत है ॥ २४ ॥
खड़ाओं रामके चरणों की रखकर तख्तके ऊपर ॥
भरतने क्यों झुकाया शीश वह लकड़ी की मूरत है ॥ २५ ॥
करें सिजेदा[1] अगर पत्थर समझ कर तबतो काफ़र[2] हैं ॥
कुफर क्यों आएगा समझें अगर रहबर[3] की मूरत है ॥ २६ ॥
इसे मानो न मानो यह तो साहिब आपकी मरज़ी ॥
न्यायमत कोई बतलादे कि क्यों नाकाम मूरत है ॥ २७ ॥

३

(चाल बजारा) टुक हिर्सो हवा को छोड मियां मत देश बिदेश फिरे मारा ॥

अब वहमो गुमां कर दूर ज़रा क्यों मूरतसे घबराता है ॥
यह सारी चीजें मूरत हैं तो कुछ पीता खाता है ॥
क्या तख्त पिलंग और ताज निशां क्या क़िले महल बनवाता है ॥
क्या बग्घी टमटम हाथी घोड़े जिनपर आता जाता है ॥
सब खेल बना है मूरतका यह नज़र तुझे जो आता है ॥
अब वहमो गुमां कर दूर ज़रा क्यों मूरतसे घबराता है ॥ १ ॥
यह हाथ पाओं सब मूरत हैं मूरतका अजब तमाशा है ॥
मूरत ही खेल खिलोने हैं मूरतही खील पताशा है ॥
क्या कांटा तोला रत्ती है क्या माशा है दो माशा है ॥
क्या बालक बच्चा पीरो जवां क्या ज़िन्दा है क्या लाशा है।
सब खेल बना है मूरतका यह नज़र तुझे जो आता है ॥

१ नमस्कार—२ नास्तिक—३ रस्ता बताने वाला—

अब वहमो गुमां कर दूर ज़रा क्यों मूरतसे घबराता है ॥ २ ॥

क्या पानी मिट्टी आग हवा क्या बादल बिजली पाला है॥
क्या बारिश ओले नहर समन्दर क्या दरिया क्या नाला है॥
क्या सूरज चन्दर तारा हैं क्या सूरजका उजियाला है॥
क्या नीला पीला लाल गुलाबी क्या धोला क्या काला है॥
सब खेल बना है मूरतका यह नज़र तुझे जो आता है ॥
अब वहमो गुमां कर दूर ज़रा क्यों मूरतसे घबराता है ॥ ३ ॥

क्या फूल हज़ारी फुलवारी क्या सुंदर केशर क्यारी है ॥
क्या गैंदा मरवा मौलसरी क्या जुई चम्बेली प्यारी है ॥
क्या लट्ठा मलमल बेल ज़री क्या खद्दर धोती सारी है ॥
क्या खट्टा मीठा तेज कसैला क्या कड़वा क्या खारी है ॥
सब खेल बना है मूरतका यह नज़र तुझे जो आता है ॥
अब वहमो गुमां कर दूर ज़रा क्यों मूरतसे घबराता है ॥ ४ ॥

क्या लालच गुस्सा नफ़रत है क्या दग़ा फरेब और मक्कारी ॥
क्या रहम मोहब्बत कुलफ़त कीना और तअस्सुब अय्यारी ॥
गो सब माद्दे की सूरत हैं है रूह सभी सेती नियारी ॥
पर न्यामत जैसी देखे मूरत वैसा असर पड़े कारी ॥
सब खेल बना है मूरतका यह नज़र तुझे जो आता है ॥
अब वहमो गुमां कर दूर ज़रा क्यों मूरतसे घबराता है ॥ ५ ॥

४

चाल—कहां ले जाऊं दिल दोनो जहां में इसकी मुशकिल है ॥

दिल दुनियामें कैसी कारगर हर शय की सूरत है ॥

खयाले नेको बद होनेका बाइस एक मूरत है ॥ १ ॥
कहीं है यार की मूरत कहीं दुशमन की मूरत है ॥
कहीं दूल्हा की मूरत है कहीं दुलहन की मूरत है ॥ २ ॥
कहीं ज़ालिमकी मूरत है कहीं आदिलकी मूरत है ॥
कहीं शाहो गदा आलिम कहीं जाहिल की मूरत है ॥ ३ ॥
शहीदों की हजारों मूरतें दुनियामें कायम हैं ॥
सती परेहज़ गारोंकी कहीं आबिद की मूरत है ॥ ४ ॥
जुदागाना असर दिलपर हर इक मूरत का होता है ॥
भला फिर किसतरह कहतेहो यह नाकाम मूरत है ॥ ५ ॥
तार बर्क़ी में डोट और बार दो आवाज़ कायम हैं ॥
हैं सब बेजान पर मतलब रसानी की तो सूरत है ॥ ६ ॥
घड़ी की सूइयां टुकड़े हैं लोहेके बजाहिर गो ॥
मगर टाइमके बतलानेकी यह भी एक सूरत है ॥ ७ ॥
हरी झंडी लाल झंडी सिरफ कपड़ेकी धज्जी हैं ॥
मगर गाड़ी रोकनेकी चलानेकी तो सूरत है ॥ ८ ॥
ज़रा झंडीकी ग़लतीसे हज़ारों खेत रहते हैं ॥
ट्रेनोंके बचाने और लड़ानेकी वह सूरत है ॥ ९ ॥
रंगी चिट्ठी फटा कारड वह गो काग़ज़के टुकड़े हैं ॥
हंसाने और रुलानेकी तो काफी एक सूरत है ॥ १० ॥
नोट और दर्शनी हुंडी किसीके हाथका पर्चा ॥
कहो नक़दी दिलानेकी यह क्या आसान सूरत है ॥ ११ ॥
यह गो बुनियादका पत्थर सिरफ पत्थर का टुकड़ा है ॥

मगर लाखों बरसकी यादगारी की तो सूरत है ॥ १२ ॥
यूनियन जैकको लाखों झुकादेते हैं सर अपना ॥
है गो कपड़ेका टुकड़ा पर हकूमतकी तो सूरत है ॥ १३ ॥
वेद अंजील और कुर आन गो काग़ज़के पर्चे हैं ॥
मगर इक धर्मका रस्ता बतानेकी तो सूरत है ॥ १४ ॥
आबे ज़मज़म आबे कोसर आबे गंगाको आखोंसे ॥
लगाते किस लिये हो वह भी इक माद्दे की सूरत है ॥ १५ ॥
ग़रज़ जितने निशां दुनियामें अपना काम करते हैं ॥
गो सब माद्दे की मूरत हैं मगर मतलबकी सूरत है ॥ १६ ॥
बिना मूरतके दुनिया में नहीं कोई काम चल सकता ॥
न्यायमत ध्यान करनेकी भी कारण एक मूरत है ॥ १७ ॥

५

चाल—कौन कहता है कि मैं तेरे खरीदारों में हूं ॥

कौन कहता है कि बिलकुल बे असर तसवीर है ॥
बल्के जादू जिसको कहते हैं यही तसवीर है ॥ १ ॥
राय पद्मोत्तर को जिसने था दीवाना करदिया ॥
देखलो वह द्रौपदीकी काग़ज़ी तसवीर है ॥ २ ॥
सच कहो आखोंमें आजातेहैं आंसू या नहीं ॥
सामने जिसदम हक़ीक़तकी कोई तसवीर है ॥ ३ ॥
जोश आजाता है दूशासनपे क्यों हर एकको ॥
द्रौपदीके चीरकी जब देखता तसवीर है ॥ ४ ॥
छोड़कर राजोंको संजुक्ताने स्वम्बरके बिषे ॥

हार गल डाला जहां चौहानकी तसवीर है ॥ ५ ॥
खिंच गई तलवार बस जयचन्द पिर्थीराज में ॥
खेत लाखोंका पड़ा बाइस यहीं तसवीर है ॥ ६ ॥
न्यायमत अच्छी बुरी तसवीर में तासीर है ॥
जो असर करती नहीं वह कौनसी तसवीर है ॥ ७ ॥

६

चाल—कौन कहता है कि मैं तेरे खरीदारों में हू ॥

सार दुनियामें अगर कुछ है तो है वैरागता ॥
तेरी मूरतसे प्रभू होती अयां वैरागता ॥ १ ॥
हमने देखी हैं हज़ारों मूरतें संसारमें ॥
पर तुम्हारी सी कहीं पाई नहीं वैरागता ॥ २ ॥
नाकपर आकरके ठैरी है जो आंखोंकी निगाह ॥
साफ यह दर्शा रही है आपकी वैरागता ॥ ३ ॥
आतम अनुभव और निजानन्द रस हो पर्घट देखकर ॥
आप परका भेद दिखलाती तेरी वैरागता ॥ ४ ॥
मोक्षका मारग बताती वीतरागी भावसे ॥
ध्यानका नक़शा जमाती है तेरी वैरागता ॥ ५ ॥
शील संजम दान तप विज्ञान सब कुछ है यही ॥
बस निजात होनेका ज़रिया है यही वैरागता ॥ ६ ॥
न्यायमत दिलमें न हो रग़बत न नफ़रत ग़ैर से ॥
गर असर कुछ हो तो हो पैदा तेरी वैरागता ॥ ७ ॥

७

चाल—कहां लेजाऊ दिल दोनो जहां में इसकी मुशकिल है ॥

दरश जिनराजकी मूरतका पाए जिसका जी चाहे ॥
भाव बैरागका दिलमें जमाए जिसका जी चाहे ॥ १ ॥
बिषयका रागका देखो नहीं कोई निशां इसमें ॥
शुबा जो दिलमें हो आकर मिटाए जिसका जी चाहे ॥ २ ॥
ज़रा दर्शनसे हो बैरागता पैदा तेरे दिलमें ॥
अगर निश्चय नहीं हो आज़माए जिसका जी चाहे ॥ ३ ॥
किसीके कहने सुन्नेकी नहीं परवाः हमें न्यामत ॥
कोई सौ बात गर झूटी बनाए जिसका जी चाहे ॥ ४ ॥

८

चाल- -कहां लेजाऊ दिल दोनो जहां में इसकी मुशकिल है ॥

भाव बैराग दर्शावे जो मूरत हो तो ऐसी हो ॥
न रागी हो न द्वेषी हो जो मूरत हो तो ऐसी हो ॥ १ ॥
जिसे देखेसे पैदा दिलमें- हो अनुभव निजातमका ॥
स्व परका भेद पर्कांशे जो मूरत हो तो ऐसी हो ॥ २ ॥
न बस्तर हो न शस्तर हो नहीं हो संगमें नारी ॥
न प्रिग्रह हो न बाहन हो जो मूरत हो तो ऐसी हो ॥ ३ ॥
दिगम्बर रूप पद्मासन बिगत दूषन निशभूषन ॥
यही अरिहंतकी मूरत जो मूरत हो तो ऐसी हो ॥ ४ ॥
नज़र आखोंकी नाशाकी अनी परसे गुज़रती हो ॥
सरासर शान्त मूरत हो जो मूरत हो तो ऐसी हो ॥ ५ ॥

सरब जग जीव हितकारी छबी बैराग सुखकारी ॥
न्यायमत जाए बलिहारी जो मूरत हो तो ऐसी हो ॥ ६ ॥

९

(दोहा)

पर्म हितेषी जगतके बीत राग भगवान ॥
सत वक्ता सर्वज्ञ नित नमत होत कल्याण ॥ १ ॥
कारज कोई जगतमें बिन मूरत नहीं होय ॥
लघु दीरघ अच्छा बुरा इस बिन बने न कोय ॥ २ ॥
जल बायू मिट्टी अगन तारे चन्द अरु भान ॥
पांचों इन्द्री और मन हैं सब मूरतिवान ॥ ३ ॥
परिणामोंके बदलमें प्रतिमा कारण जान ॥
मूरति मंडनके बिषे हैं लाखों पर्माण ॥ ४ ॥
जो नर हैं अज्ञान बश प्रतिमासे प्रतिकूल ॥
पक्ष छोड़कर देखलें है यह उनकी भूल ॥ ५ ॥
स्याद्वाद निक्षेप अरु नय प्रमाण दर्शाय ॥
सतासतय निर्णय करो जो भ्रम तिमर नसाय ॥ ६ ॥
न्यामत सत्य बिचार कर जग जीवन हित काज ॥
लिख युक्ती दृष्टान्तदे मूरति मंडन आज ॥ ७ ॥

१०

(द्वितीय भाग—मूर्ति मंडन पत्र)

(नोट) अप्रिल सन् १९२० (वैसाख सम्वत् १९७७) में लाला पन्नालाल बोहरा बजरंगगढ निवासी (रियासत गवालियर) का एक पत्र

लाला बिहारीलाल गुना छावनी वाले की मार्फत हमारे पास आया था उसमें चार प्रश्न किये थेः—

(१)—प्रतिमा स्थापन क्यों आवश्यकीय है और इसमे क्या लाभ है ॥ आर्य्य समाज कहती है कि निराकार ईश्वर की मूर्ति होही नहीं सकती—इसका क्या उत्तर है ॥

(२)—प्रतिमा पूजन कैसे होनी चाहिये ॥

(३)—हमारा स्थान और हमारा परिवार आदि किस किस प्रकार है सो पूर्ण रूप से बताया जावे ॥

(४)—अगर शकी हो तो उत्तर कविता रूप पदों में दिया जावे ॥

इन चारों प्रश्नों का जो उत्तर २४ मई सन् १९२० को १३ पदों में दिये गये थे—वहही उत्तर सर्व जन हितार्थ नीचे लिखे जाते हैं ॥

प्रणमूं श्री जिनेन्द्रको बीतराग सुखकंद ॥
हितकारी सर्वज्ञ नित सत चित पर्मानन्द ॥ १ ॥
पन्नालालजी बोहरे सहित अनेक समाज ॥
बजरंगगढ़में बसतहो मध्य गवालियर राज ॥ २ ॥
जय जिनेन्द्र तुमको लिखे न्यामत अग्गरवार ॥
नगर हमारा जानियो हांसी और हिसार ॥ ३ ॥
पत्र आपका आइयो हस्त बिहारीलाल ॥
प्रश्न आपके बांच कर जान लियो सब हाल ॥ ४ ॥
धन्य आपकी चतुर्ता धन्य प्रेम सुबिचार ॥
प्रश्नोंका उत्तर लिखूं निज बुद्धी अनुसार ॥ ५ ॥
पहले माया जीवके दर्शाऊं कुछ भेद ॥
इन दोके जाने बिना मिटे नहीं भ्रम खेद ॥ ६ ॥

पक्षपातको छोड़कर करियो ज़रा बिचार ॥
सत मारग निश्चय करो उतरो भवदधि पार ॥ ७ ॥

११

जीव और प्रकृति का विवेचन ॥

चाल—कहां लेजाऊं दिल दोनो जहां में इसकी मुशकिल है ॥

अजब दुनियाकी हालत है अजब यह माजरा देखा ॥
जिसे देखा उसे वहमो गुमांमें मुब्तला देखा ॥ १ ॥
प्रकृती जीवमें अनमेल सा झगड़ा पड़ा देखा ॥
अनादी कालसे लेकिन है दोनोंको मिला देखा ॥ २ ॥
इनही दोनोंका हमने बस निज़ाश जाबजा देखा ॥
कहीं इन्सां कहीं हैवां कहीं शाहो गदा देखा ॥ ३ ॥
यही है आतमा जिसको अरबमें रूह कहते हैं ॥
ज्ञान मय सत् चिदानन्द रूप लाखों नाम लेते हैं ॥ ४ ॥
कहीं माद्दा कहीं माया कहीं मैटर कहीं पुद्गल ॥
यह सारे नाम हैं उसके जिसे प्रकृती कहते हैं । ५ ॥
बशकले दूध पानी गो मिले आपसमें रहते हैं ॥
मगर दर अस्ल यह दोनों जुदा हर इकसे रहते हैं ॥ ६ ॥
करम कहते हैं जिसको वह यही बदकार माया है ॥
इसीने सारी दुनियामें अजब अंधेर छाया है ॥ ७ ॥
यही तो आतमाको भर्मके चक्कर में लाया है ॥
हरीहर नर सुरासुर सबको दीवाना बनाया है ॥ ८ ॥

पशू पक्षी चराचर सबको फंदेमें फंसाया है ॥
निराला ढंग कर्मोंका अजब नक़शा दिखाया है ॥ ९ ॥
सदा स्वर्गों में भी हरगिज़ नहीं इस जीवको कल है ॥
नरकमें हर तरफ हरदम मची दिनरात कलकल है ॥ १० ॥
मनुष गति में भी देखो जीवको नहीं चैन इकपल है ॥
मौतका बज रहा डंका दमादम और चल चल है ॥ ११ ॥
कहां जाएं कहो न्यामत बड़ी दुनियामें मुशकिल है ॥
सभी संसार व्याकुल है न यहां कलहै न वहां कलहै ॥ १२ ॥

१२

ईश्वर का स्वरूप ॥

चाल—कहां लेजाऊं दिल दोनों जहां में इसको मुशकिल है ॥

सुखी वह हैं जिन्होंने इस करम के जाल को तोड़ा ॥
जगत जंजालको छोड़ा सकल दुनिया से मूंह मोड़ा ॥ १ ॥
बने आतमसे परमातम शिवासुन्दर से नेह जोड़ा ॥
बताया मोक्षका मारग कुमारगका भरम तोड़ा ॥ २ ॥
वही ईश्वर वही परमातमा हक़ गोड कुछ कहलो ॥
हजारों नाम हैं उसके जो कुछ कहिये सो है थोड़ा ॥ ३ ॥
वह जीवन मुक्तहै सर्वज्ञ है और वीतरागी है ॥
हितोपदेशी परोपकारी है सब विषयोंका त्यागी है ॥ ४ ॥
न कपटी है न मानी है न क्रोधी है न लोभी है ॥
न दुशमन है न हामी है न द्वेषी है न रागी है ॥ ५ ॥

न्यामत जिसकी उस परमातमासे प्रीत लागी है ॥
उसीके दिलमें समझो ज्ञानकी बस जोत जागी है ॥ ६ ॥

१३

मूर्ति स्थापना करने की ज़रूरत ॥

चाल—कहां लेजाऊं दिल दोनों जहां में इसकी मुशक्लि है ॥

मुनासिब है उसी भगवंतको मस्तक नमावें हम ॥
उसीके ध्यानका फोटो जरा हिर्दयमें लावें हम ॥ १ ॥
बिना मूरत किसीका ध्यान दिलमें हो नहीं सकता ॥
तो उसकी शान्त मुद्राकी कोई मूरत बनावें हम ॥ २ ॥
किया है जिसने हित उपदेश दे उपकार दुनियाका ॥
बिनयसे क्यों न उसकी मूर्तिको सर झुकावें हम ॥ ३ ॥
करें सिजदा अगर पत्थर समझकर तबतो काफ़र हैं ॥
अगर रहबर समझ करके करें सिजदा तो क्या डर है ॥ ४ ॥
मुसलमां जाके सिजदा करते हैं मक्केमें ईश्वर को ॥
बनी है स्लीबकी मूरत जहां ईसाका मंदिर है ॥ ५ ॥
आर्य्य मंदिरों में भी शबीः दयानंद स्वामी की ॥
रखी समझा बिनय करनेकी यह तदबीर बेहतर है ॥ ६ ॥
जुदागाना तरीके हैं बिनय करनेके दुनियामें ॥
कहीं क़ब्रें कहीं फ़ोटो कहीं भगवतकी मूरत है ॥ ७ ॥
कहीं टोपी उतारें हैं कहीं जूता उतारें हैं ॥

कहीं मस्तक पसारें सब अदब करने की सूरत है॥ ८ ॥
कहीं पूजा कहीं घंटा कहीं फूलोंका अर्चन है ॥
कहीं अक्षत कहीं पर जल कहीं कुछ और सूरत है ॥ ९ ॥
इसी हेतु से उस भगवंतकी मूरत बनाते हैं ॥
विनय करके दरब अरिहंत चर्णों में चढ़ाते हैं ॥ १० ॥
देख बैराग मुद्राको भेद विज्ञान होता है ॥
निजानन्द रसको पीकरके परम आनन्द पाते हैं ॥ ११ ॥
मगन हो न्यायमत ईश्वरका जब धनबाद गाते हैं ॥
इधर आनन्द पाते हैं उधर घंटा बजाते हैं ॥ १२ ॥

१४

अथोक्त मूर्तिका निषेध ॥

चाल—कहां लेजाऊ दिल दोनो जहां में इसकी मुशकिल है ॥

वह अज्ञानी है जो ईश्वरको भी रागी बताते हैं ॥
सुलानेको जगानेको अगर घंटा बजाते हैं ॥ १ ॥
हैं ग़लती पर जो ईश्वरके लिये भोजन बनाते हैं ॥
मान कर फिर उसे परशाद भोग अपना लगाते हैं ॥ २ ॥
हैं मूरख वह भी जो ईश्वरको फूलों में बताते हैं ॥
उसे हर जा पवन जल आग पत्थरमें जिताते हैं ॥ ३ ॥
जो अज्ञानी की बातें मानकर चक्करमें आते हैं ॥
बिना हेतुके ईश्वरको सरब व्यापी बताते हैं ॥ ४ ॥

निराकार और सरब ब्यापी जो ईश्वरको बताते हैं ॥
उन्हींसे पूछिये कैसे उन्हें चंदन चढ़ाते हैं ॥ ५ ॥
दिखा हाउका डर न्यामत वह लोगोंको डराते हैं ॥
चिदानन्द रूप ईश्वरको जो जग करता बताते हैं ॥ ६ ॥

१५

ईश्वरका शुद्ध लक्षण ॥

चाल—कहां लेजाऊं दिल दोनो जहां में इसकी मुशकिल है ॥

जैनमत ऐसा ईश्वरका नहीं लक्षण जिताता है ॥
ठीक जो उसका लक्षण है सुनो आगे बताता है ॥ १ ॥
न वह घट घटमें जाता है मगर घट घटका ज्ञाता है ॥
न करता है न हरता आप आपेमें समाता है ॥ २ ॥
निरंजन निर्विकारी है निजानंद रस बिहारी है ॥
वह जीवन मुक्त है और सबका हित उपदेश दाता है ॥ ३ ॥
मारता है न मरता है न फिर अवतार धरता है ॥
न्यायमत सारे झगड़ोंसे सरासर छूट जाता है ॥ ४ ॥

१६

जैनमतके अनुसार पूजा करनेका आशय और उसका भाव और विधि पूजा का आशय यही है कि भगवत के गुणों में राग और संसारी पदार्थों में वैराग भाव पैदा हो ॥

(सम्पूर्ण पूजा जयमाल आदि सहित अलग छपी है देखो पुस्तक अंक ४—जिनेन्द्र पूजा मूल्य ꠲))

चाल—हाय अच्छे पिया मोहे देश बुलालो हिन्द में जी घबरावत है ॥

जिनेन्द्र पूजा ॥

अर्घस्थापना (दोहा) (१)

परम जोति परमातमा परम ज्ञान पर्वीन ॥
बन्दूं परमानन्द मय घट घट अंतर लीन ॥ १ ॥
तुमने हित उपदेशदे किया जगत उपकार ॥
सो तुम भक्ती और बिनय है सबको स्वीकार ॥ २ ॥
इष्ट बस्तु संसारकी जानी सभी असार ॥
व्यर्थ जानके डारहूं भगवत चरण मंझार ॥ ३ ॥

जलसे पूजा (२)

स्वामी तू हितकारी दुख परहारी चर्णों में सीस नमावत हूं ॥टेक॥
मलीन बस्तुको उज्जल यह नीर करता है ॥
पवित्र करनेका गो जल स्वभाव धरता है ॥
हरी न कर्मोंकी कुछ कालिमा मगर मेरी ॥
न आत्माका कोई काम इससे सरता है ॥
सोही जान निरर्थक यह जल तेरे चर्णोंके आगे चढ़ावत हूं ।
स्वामी तू हितकारी दुख परहारी चर्णोंमें सीस नमावतहूं ॥

चन्दनसे पूजा (३)

तपत बुझाता है चन्दन बदनकी गरमी में ॥
सभी लगाते हैं घिस घिस बदनपे गरमी में ॥

मगर मिटी है न अबतक अनादि से मेरी ॥
तपत कषायोंकी बिषियोंकी सर्दि गरमी में ॥
स्वामी जान निरर्थक चन्दन तेरे चर्णोंके आगे चढ़ावतहूं ॥
स्वामी तू हितकारी दुख परहारी चर्णोंमें सीस नमावतहूं ॥

अक्षत से पूजा (४)

यह अक्षतोंका भरा थाल जगमगाता है ॥
मुझे बनावेगा अक्षय खयाल आता है ॥
मगर मिला है न अबतक तो अक्षय पद स्वामी ॥
यह झूटा नामको अक्षत यूंहीं कहता है ॥
सोही जान निरर्थक अक्षत तेरे चर्णोंके आगे चढ़ावतहूं ॥
स्वामी तू हितकारी दुख परहारी चर्णों में सीस नमावत हूं ॥

पुष्प से पूजा (५)

यक़ीं था फूलों की कलियां सुगंधसे पूरित ॥
हरेंगी कामको यह बनके बानकी सूरत ॥
मगर न आजतलक कामदेवको जीता ॥
बनी है कलियोंकी झूटी ही बानकी सूरत ॥
सोही पुष्प निरर्थक जानके तेरे चर्णोंके आगे चढ़ावत हूं ॥
स्वामी तू हितकारी दुख परहारी चर्णों में सीस नमावत हूं ॥

नैवेद्य से पूजा (६)

नैवेद्य आदि पदारथमें प्राण था मेरा ॥
क्षुधाको दूर करेगी यह ध्यान था मेरा ॥

अनादि कालसे अबतक मगर क्षुधा मेरी ॥
नहीं हरी है सो झूटा गुमान था मेरा ॥
सोही जान निरर्थक नेवज तेरे चर्णों के आगे चढ़ावत हूं ॥
स्वामी तू हितकारी दुख पर हारी चर्णों में सीस नमावत हूं ॥

दीप से पूजा (७)

तिमरका जगमें यह दीपक बिनाश करता है ॥
अंधेरी रातमें बेशक प्रकाश करता है ॥
तिमर अज्ञानको लेकिन नहीं हरा मेरे ॥
अंधेर मोह अभी मनमें बास करता है ॥
सोही जान निरर्थक दीपक तेरे चर्णोंके आगे चढ़ावत हूं ॥
स्वामी तू हितकारी दुख पर हारी चर्णों में सीस नमावत हूं ॥

धूप से पूजा (८)

अगन जलाती है चंदन कपूर सुंदरको ॥
हवनमें धूप सुगंधित करे है मंदिरको ॥
मगर जलाए नहीं अबतलक करम मेरे ॥
करूंगा फैर मैं क्या धूपको वसुंधरको ॥
सोही धूप निरर्थक जानके तेरे चर्णोंके आगे चढ़ावत हूं ॥
स्वामी तू हितकारी दुख परहारी चर्णोंमें सीस नमावत हूं ॥

फलसे पूजा (९)

अनेक फल हैं अवश्य यह तो देंगे फल मुझको ॥
खयाल था कि श्रीफल करे सुफल मुझको ॥

मगर मिला है न अब तक तो मोक्ष फल मुझको ॥
सो ऐसे नामके फल चाहिये न फल मुझको ॥
सोही जान निरर्थक श्रीफल तेरे चर्णोंके आगे चढ़ावत हूं ॥
स्वामी तू हितकारी दुख परहारी चर्णों में सीस नमावत हूं ॥

अर्घ (१०)

आठों द्रव्योंको सुखकारी मैं समझता था ॥
करेंगे कुछ मेरा उपकार मैं समझता था ॥
मगर हुवा है न कल्याण मेरी आतमका ॥
सो सब असार हैं-गो सार मैं समझता था ॥
सोही जान निरर्थक अर्घ तुम्हारे चर्णोंके आगे चढ़ावत हूं ॥
स्वामी तू हितकारी दुख परहारी चर्णों में सीस नमावत हूं ॥

आशीर्वाद (दोहा (११)

जल फल आदि वस्तुमें मम परणति नहीं जाय ॥
तज पर परणति न्यायमत निज परणति में आय ॥ १ ॥
बिन इच्छा शुभ भावसे जो पूजे जिनराय ॥
पुन्य बढ़े संसारमें पाप करम नश जाय ॥ २ ॥
न्यामत अर्चन की बिधी कही श्री भगवान ॥
इस बिध जो पूजा करे लहे स्वर्ग निर्वाण ॥ ३ ॥

१७

जीवकी शुद्ध दशा और अरिहंत पदकी प्राप्ति ॥

चाल—गुल मत काटे अरे बागबां गुलसे गुलको हंसनेदे ॥ लावनी ॥

तीन अवस्था हैं चेतनकी यूं भगवत फरमाते हैं ॥

शुद्ध शुभाशुभ इनहोंका हाल तुम्हें बतलाते हैं ॥ १ ॥
अशुभ अवस्था राग द्वेषसे नाना पाप कमाते हैं ॥
जग मायाके फंदमें फंस दुर्गति में जाते हैं ॥ २ ॥
पूजा दान शील तप करके जो नर पुन्य लहाते हैं ॥
शुभ मारगसे वही जा स्वर्गों में सुख पाते हैं ॥ ३ ॥
पाप पुन्य दोनोंको त्याग जो आतम ध्यान लगाते हैं ॥
पर परणतिको त्याग निज परणतिमें लगजाते हैं ॥ ४ ॥
शुद्ध अवस्था नाम इसीका है भगवत जितलाते हैं ॥
कर्म घातिया नाश कर अर्हत पदवी पाते हैं ॥ ५ ॥
अपने केवल ज्ञान आर्से में सब विश्व लखाते हैं ॥
जग जीवनको दुखी लख धर्म उपदेश सुनाते हैं ॥ ६ ॥
निश्चय और ब्यवहार रूपसे शिव मारग दर्शाते हैं ॥
बीतराग सर्वज्ञ हितकर परमातम कहलाते हैं ॥ ७ ॥
फेर अघाती कर्म काटकर सिद्ध परम पद पाते हैं ॥
सत्त चिदानंद रूप हो फिर जगमें नहीं आते हैं ॥ ८ ॥
अर्हत हितकारी की मूरतको जो सीस निवाते हैं ॥
न्यामत वहही जगत सुख भोग मुकत पद पाते हैं ॥ ९ ॥

१८

पत्रकी अन्तिम प्रार्थना ॥

चाल—(लावनी) गुल मत काटे अरे बागवां गुलसे गुलको हंसनेदे ॥

पन्नालालजी पढ़ पत्रीको जिन पूजनमें ध्यान धरो ॥
भर्म भावको छोड़कर निज आतम कल्याण करो ॥ १ ॥

और अगर कोई शंका हो मत मनमें अर्मान करो ॥
सेठ बिहारीलालको लिख भेजो मत कान करो ॥ २ ॥
जैसी हमरी बुद्धी उत्तर दूंगा इत्मीनान करो ॥
जिन शासनके कहूं अनुकूल ठीक शर्धान करो ॥ ३ ॥
गर मेरे उत्तरको निर्बल बेयुक्ती अनुमान करो ॥
तो विशेष ज्ञानीसे अपनी मुशकिलको आसान करो ॥ ४ ॥
एक प्रश्न और लिखा कि अपने कुलका भेद बयान करो ॥
सोही सुनिये कहे न्यामत टुक हिर्दय ध्यान धरो ॥ ५ ॥

१९

न्यामत सिंह जनी अग्रवाल (कर्गी) सेक्रेटरी डिस्ट्रिक्ट बोर्ड हिसार (पंजाब) की वंशावली और स्थान व परिवारका परिचय और तीसरे प्रश्नका उत्तर ॥

चाल—(लावनी) गुल मत काटे मरे बागवां गुलसे गुलको हसनेदे ॥

अग्रवालहै जात हमारी और गर गोत हमारा है ॥
राखीवाले जानियो वंश और ब्योंक हमारा है ॥ १ ॥
हांसी नगर हिसार ज़िला सूबा पंजाब हमारा है ॥
दिल्ली यहांसे डेढ़सौ (१५०) मील यही बिस्तारा है ॥ २ ॥
हरियाना है देश श्री कुरुक्षेत्र सुनाम पियारा है ॥
जहां कृश्न पांडव कोरवने भारत युद्ध विचारा है ॥ ३ ॥
अग्रवाल उतपत स्थान अग्रोहा ग्राम पियारा है ॥
जो हिसारसे जानियो दूर कोस दस बारा है ॥ ४ ॥

उग्रसैन राजाके कुलमें हम सबका विस्तारा है ॥
दिल्ली प्रान्तमें अग्रवालोंका बल अधिकारा है ॥ ५ ॥
कृश्नलाल मह पिता व मंगलसैन सुपिता हमारा है ॥
विद्यमान है पिता मेरु तुल्य हमें सहारा है ॥ ६ ॥
माता मोहनि देवी जाको नित्य प्रणाम हमारा है ॥
चार बहन और शिखरचन्द जी भ्राता अनुज पियारा है ॥७॥
वर्तमानमें बास हमारा शहर हिसार मंझारा है ॥
हांसी नगरमें जनम भूमि घर वार हमारा है ॥ ८ ॥
पिता भाई सब मिलकर रहते सब विध आनंदकारा है ॥
ज़िला बोर्ड अनुशासन में हम पद मंत्रिका धारा है ॥ ९ ॥
रघुवीर सिंह अरु सरूप सिंह छोटा राजकुमारा है ॥
हैं यह तीनों पुत्र हमारे जैन धरम चित धारा है ॥ १० ॥
जयदेवी है नारी हमरी शील बृत चितधारा है ॥
पुत्री तीन कला-केवली छोटी नाम सितारा है ॥ ११ ॥
धनकुमार जयदेव-पवन और चौथा विजय कुमारा है ॥
पौत्र हमारे समझलो यह हमरा परिवारा है ॥ १२ ॥
शिखरचन्दके चार पुत्र त्रिय कन्या जन्म आधारा है ॥
कमलश्री गिरनारी लीलावती नाम उच्चारा है ॥ १३ ॥
सुरेंद्रकुमार पर्काशचन्द कैलाशचन्द सुत प्यारा है ॥
चौथा सुत सुलतान सिंह-लघु भाई का परिवारा है ॥ १४ ॥
न्यामत जैन धरम सुखकारी जो कुल धर्म हमारा है ॥
यह छोटा सा समझ लीजे कुल बंश हमारा है ॥ १५ ॥

२०

लाला विहारीलाल का परिचय जिसकी मारफत पत्र आया था ॥

(दोहा)

मित्र विहारीलालका अब कुछ वर्णूं हाल ॥
पत्र जिन्होंकी मारफत भेजा पन्नालाल ॥ १ ॥
गुना सहोरा जानियो उनका शुभ अस्थान ॥
राज ग्वालियरका जहां देश सुराजिस्थान ॥ २ ॥
कुंजलालके जानियो चार पुत्र सुखकार ॥
सदा लीन जिनधर्म में और जात परवार॥ ३॥
लखमीचन्द अरु हुकमचन्द अरु तीजा शिवलाल ॥
सबसे छोटा जानियो चतुर बिहारीलाल ॥ ४ ॥

२१

श्री सम्मेद शिखर जी पर लाला विहारीलाल से मिलनेका कारण और उनको हिसार में ठैराने का कारण ॥

नोट—सम्वत् १९७४ विकरम माघ के महीने में हमने संघ के साथ श्री सम्मेदाचल परवत की यात्रा करी और वहां पर लाला विहारीलाल हुकमचन्द व लखमीचन्द तीनों भाइयो से हमारा मिलना हुवा और उनकी इच्छानुसार उनके कारोबार का इन्तजाम हिसार में किया गया सो वह हिसार में आकर कारोबार करने लगे ॥

चाल—गुल मत काटे अरे बागवां गुलसे गुलको हसने दे ॥

पुन्य उदयसे श्री सम्मेदाचाल बन्दन हम किया बिचार॥

हिसार सेती वना संघ चले सँग लेकर परिवार ॥ १ ॥
उन्निससौ चुहत्तर विक्रम माघ महीना शुभदिन वार ॥
करी वंदना हरष धर मुखसे वोले जय जयकार ॥ २ ॥
लाला मंगलसैन अरु लाला फ़कीरचंद अरु गुलशनराय ॥
शेरसिंह जी जैनीलाल मिले सव हर्ष वढ़ाय ॥ ३ ॥
लाला शिवदियालसिंह जी अस्कूलों के डी आई ॥
हम सव मिलकर करी यात्रा परवतकी मन लाई ॥ ४ ॥
इस अवसर पर हुकमचन्द लखमिचन्द और विहारीलाल ॥
मिले-सभोंने करी भगवनकी पूजा हो खुशहाल ॥ ५ ॥
धरम ध्यानमें लीन देखकर आपसमें अति प्रेम हुवा ॥
इन तीनोंको हिसारमें लानेका इक़रार किया ॥ ६ ॥
तीनों भाई शुभ महूर्तमें आए चलकर नगर हिसार ॥
धन सम्पाति दे यहीं पर थाप दिया उनका व्योपार ॥ ७ ॥
मित्र विहारीलाल चतुर थे और जिनशासन के अनुसार ॥
निश दिन हमरे संगमें करते थे नित तत्व विचार ॥ ८ ॥
सज्जन और धर्मी जनका मिलना जगमें सुखकारी है ॥
धर्म ध्यान तत्वोंकी चर्चा न्यामत आनन्दकारी है ॥ ९ ॥

२२

पत्रकी समाप्ति ॥

दोहा ॥

नाम विहारीलालके पन्नालाल परवार ॥

शंक निवारण कारणे पत्र लिखे दो चार॥ १ ॥
मित्र बिहारीलालजी हमसे किया बिचार॥
सो हम यह उत्तर लिखा निज बुद्धि अनुसार ॥ २ ॥
सत्तर सात उन्नीससौ (१९७७) जानो बिक्रम साल॥
न्यामत सिंह पत्री लिखी हस्त बिहारीलाल॥ ३ ॥
आद अन्त जिनराजका धर्म सदा सुखकार ॥
धर्म बिना इस जीवका कोई नहीं हितकार ॥ ४ ॥

(तृतीय भाग इतिहासिक व सर्वोपयोगी भजन)

२३

चाल—कौन कहता है कि मैं तेरे खरीदारों में हूं ॥

कौन कहता है अरे चेतन तू होशियारों में है ॥
तू निपट नादान मूरख और नाकारों में है॥ १ ॥
करता है पेचीदगी लोटन कबूतरकी तरह ॥
साफ ज़ाहेर है कि तू अय्यार मक्कारों में है ॥ २ ॥
है दयाका रहमका नामो निशां तुझमें नहीं ॥
तू दिलाज़ारों में है ज़ालिम सितमगारों में है ॥ ३ ॥
न्हाके डाले खाक अपने तनपे हाथी जिसतरह ॥
इस तरह तू भी दीवाना ना समझदारों में है ॥ ४ ॥
जिस तरह रेशनका कीड़ा अपने तारों में फंसे ॥
देखले तूभी फंसा खुद कर्मके तारों में है ॥ ५ ॥

दिल लगाने की नहीं दुनियामें कोई चीज़ है ॥
फिर ज़रा बतला तो तू किसके तलबगारों में है ॥ ६ ॥
तू न आबी है न खाकी आतशी बादी नहीं ॥
किसलिये फिर तू कहो इनके खरीदारों में हूं ॥ ७ ॥
चन्द दानों के लिए है कैद बन्दर की तरह ॥
मोह का परदा हटा नाहक़ गिरिफ़्तारों में है ॥ ८ ॥
अपनी नादानी से जो चलता है उल्टी चाल तू ॥
पा सज़ा रोता है क्यों जब तू सज़ावारों में है ॥ ९ ॥
कर मिलान अपना ज़रा जिनराज की तसवीर से ॥
है वही नक़्शा तेरा जो कुछ कि अवतारों में है ॥ १० ॥
भूल से है मुब्तला दुनियां के आज़ारों में तू ॥
तू न बीमारों में है और ना खतावारों में है ॥ ११ ॥
तूही करता तूही हरता भोगता कर्मों का तू ॥
अपने हाथों से बना तू आप बीमारों में है ॥ १२ ॥
है बिलाशक न्यायमत तू ज्ञानमय आनन्दमय ॥
अपनी ग़लती से बना नाहक़ गुन्हेगारों में है ॥ १३ ॥

२४

चाल—सभा में मेरा तूही तो करेगा निस्तारा ॥

(चाल अलीबख्श रिवाड़ी वाले की)

दुनियां में तेरा धर्म ही करेगा निस्तारा ॥ टेक
द्रुपद सती का चीर बढ़ाया—श्रीपाल का कुष्ट हटाया ॥

अग्नि शीतल नीर बनाया-सिया को आन उभारा ।तेरा०॥१॥
शूली टूट भया सिंघासन-गए मुक्त श्रीसेठ सुदर्शन ॥
ली मारीच जो सम्यकदर्शन- तिर्थंकर पद धारा ॥ तेरा०॥२॥
धर्म सदा जगमें सुखकारी—दुखहारी कलमल परहारी ॥
न्यामत धर्म जगत हितकारी-पाप बिमोचन हारी ॥ तेरा० ॥३॥

२५

चाल—(राग आसावरी) काहे मिचावे शोर पपैय्या ॥

काहे रहो शुध भूल चेतन ॥ काहे रहो शुध भूल ॥ टेक ॥
आंब हेत तैं बाग लगायो·फल चाखनको जी ललचायो ॥
बो दिये पेड़ बंबूल ॥ चेतन० ॥ १ ॥
झूटे देव गुरू नित माने-पर परणाति निज परणाति जाने ॥
समकित से प्रतिकूल ॥ चेतन० ॥ २ ॥
निशदिन भोग बिषयमें राचा-काम क्रोध माया मध माचा ॥
बोवत कांटे शूल ॥ चेतन० ॥ ३ ॥
चेतनको तैं जड़वत जाना-और जड़को चेंतन कर माना ॥
ऐसी समझ सर धूल ॥ चेतन० ॥ ४ ॥
शुभको त्याग अशुभ चित दीना-न्यामत सौदा ऐसा कीना ॥
ब्याज रहा ना मूल ॥ चेतन० ॥ ५ ॥

२६

(चाल क़वाली)— सर रखदिया हमने दरे जानान समझ कर ॥

अब लेलिया शर्ण तेरा हितकारी समझकर-दुखहारी समझकर॥
हितकारी समझकरतुझेअबिकारी समझकर-सुखकारीसमझकर१
अबतकतो कषायोंमें है दिल अपना लगाया-बिषयोंमें फंसाया॥
अबतज दिये सारे महा दुखकारी समझकर-अघकारी समझकर२
बिषियोंका भोग करते तो उम्रें गुज़र गईं-सदियें गुज़र गईं ॥
अबतजदिये मैंने सभी जल खारी समझकर-बीमारी समझकर३
नादानीसे हिंसाको कभी पाप न समझा-संताप न समझा ॥
न्यामत इसे अब छोड़दे दुखकारी समझकर-भयकारीसमझकर४

२७

(चाल बहरेतवील)—कोई चातुर ऐसी सखी ना मिली ॥

(बृद्ध बिवाह निषेध)

अरे बूढ़े कहां तेरी अक्ल गई—
अबतो शादीकी तेरी उमरही नहीं ॥
काहे छोटीसी अबलाको बिधवा करे—
तेरे दिलमें दयाका असरही नहीं ॥ १ ॥
तेरी गरदन हिले मुख राल चले—

तेरी सीधी तो होती कमरही नहीं ॥
कफ़नको लिये सरपे मौत खड़ी—
देख क्या तुझको आती नज़रही नहीं ॥ २ ॥
मत भोग विलासकी आस करे—
मत भारतका पापी तू नाश करे ॥
तूतो मरकरके दुरगतमें बास करे—
ऐसी शादीका अच्छा समरही नहीं ॥ ३ ॥
भोग करते गए साठ साल तुझे—
हाए अव भी तो आता सवर ही नहीं ॥
तेरा थर थर तो कांपे है सारा बदन—
दांतकोई भी आता नज़र ही नहीं ॥ ४ ॥
मत बूढ़ों की बच्चों की शादी करो—
मत हिन्द की तुम बरबादी करो ॥
कहे न्यामत बुढ़ापे में बचपन में तो—
भूलशादी का करना ज़िकर ही नहीं ॥ ५ ॥

२८

नोट—श्री अकलक जी और उनके छोटे भाई दुकलंक जी दोनों विद्या पढने के लिए चीन देश में गए थे— कुछ दिनों के वाद उन दोनों को जैनी मालूम करके राजा ने उनको कत्ल करने का हुक्म देदिया—यह दोनों वहां से जान बचाकर भागे मगर पीछे से फौजने उनपर हमला किया—अब इस मुसीबत के समय में एक ऐसा अवसर आगया कि इन दोनों में से एक बच सकता था—चूं कि छोटे भाई की निसबत बड़े भाई अकलंक जी स्याद्वाद रूप न्यायशास्त्र के विद्वान थे और

जैन धर्म का प्रचार बखूबी कर सकते थे इस लिए धर्म की प्रभावना बढाने के लिए छोटा भाई बड़े भाई को बचाने और खुद मरने के लिए तय्यार होगया और अपने भाई से इस तरह कहने लगा ॥

चाल—कहां लेजाऊं दिल दोनों जहां में इसकी मुशकिल है ॥

जब आई चीनकी सैना कत्ल करनेको दोनोंको ॥
कहा दुकलंकने भाईसे तब यूं इल्तिजा करके ॥ १ ॥
न कीजे भाई अब कुछ ग़म ज़रा भी मेरे मरनेका ॥
चले जावें यहांसे आप अपनी जां बचा करके ॥ २ ॥
अमर है आतमा दुकलंकको मरनेका डर क्या है ॥
धरमकी रोशनी फैलादे तू भारत में जाकरके ॥ ३ ॥
मुझे मरने में राहत है मैं सच्चे दिलसे कहता हूं ॥
श्री अकलंक भाईके चरणमें सर झुका करके ॥ ४ ॥
बड़ा मिथ्यातका हिंसाका है परचार भारतमें ॥
हटादे भाई तू जिन धर्मकी अज़मत दिखा करके ॥ ५ ॥
महोब्बत छोड़दे मेरी कि दुनिया चन्द रोज़ा है ॥
धरमका काम कर जाकर मुसीबत भी उठा करके ॥ ६ ॥
तमन्ना ज़िन्दगी की है नहीं स्वर्गों में जानेकी ॥
है ख्वाहिश हिन्दको धर्मी बनादे तू जगा करके ॥ ७ ॥
न्यायमत सबके दिलसे दूर होवे भाव हिंसाका ॥
दयामय धर्मका परकाश हो हिंसा हटा करके ॥ ८ ॥

२९

(चाल-आसावरी)—काहे मिचावे शोर पपैया ॥

चेतन यूंही रह्यो भ्रम ठान ॥ टेक ॥
पर भावनको निजकर माने-निज परणति पर परणति जाने ॥
छायो तिमर अज्ञान ॥ चेतन० ॥ १ ॥
जैसे स्वान कांच के मांहीं—लख निज छाया करत लड़ाई ॥
त्यों तू रह्यो दुख मान ॥ चेतन० ॥ २ ॥
ज्यों ज्योरी लख निश मंझधारा-माने ताही भुजंगमकारा ॥
कांप रह्यो भय आन ॥ चेतन० ॥ ३ ॥
मोह अविद्या के बश होके-निज सम्पति परमानन्द खोके ॥
हो रह्यो निपट अयान ॥ चेतन० ॥ ४ ॥
न्यामत तज यह भूल अनारी-छांड़ो मोह महा दुखकारी ॥
होवे उदय दृग भान ॥ चेतन० ॥ ५ ॥

३०

(चाल बहरे तवील)—कोई चातुर ऐसी सखी ना मिली ॥

अरे मूरख तू भटका फिरे है कहां—
तुझे अच्छे बुरे की खबर ही नहीं ॥
सरसे पाओं तलक तू बदी से भरा—
काम नेकी का आता नज़र ही नहीं ॥ १ ॥
सब बुरी रीतियां एक दम दूर कर—

चौधरी और पंचों की पर्वाः न कर ॥
यह ग़रीबों पे हरगिज़ न करते नज़र—
इनके दिल में दया का असर ही नहीं ॥ २ ॥

व्यर्थ व्यय इस ज़माने में अच्छा नहीं—
प्यारे धन का लुटाना भी अच्छा नहीं ॥
बनके कंगाल रहना भी अच्छा नहीं—
ऐसी बातों का अच्छा समर ही नहीं ॥ ३ ॥

ताश चौसर मिचाना भी अच्छा नहीं—
खेलमें दिन गुमाना भी अच्छा नहीं—
खाली बैठके खाना भी अच्छा नहीं--
बिना उद्यमके होगा गुज़रही नहीं ॥ ४ ॥

धर्म रीतिसे कुछ धन कमाया करो--
ध्यान विद्यामें भी कुछ लगाया करो ॥
दर्द दुखियोंका कुछतो बटाया करो--
न्यायमत क्या किसीका फिकरही नहीं ॥ ५ ॥

३१

चाल—कहां लेजाऊं दिल दोनो जहां में इसकी मुशकिल है ॥

जैनमत होगया मुर्दा कोई अकसीर पैदाकर ॥
उमास्वामी से और अकलंकसे तू बीर पैदाकर ॥ १ ॥
न्यायके फिलसफाके शास्तर दुनियाको दिखलाकर ॥
जैनमतकी सदाक़तकी ज़रा तासीर पैदाकर ॥ २ ॥

जो है ख्वाहिश रहे जिन्दा जैनमत इस ज़माने में ॥
तो चकवावैन चंद्रगुप्त से रणवीर पैदाकर ॥ ३ ॥
हटाना है तुझे गर ज़ुल्मको हिंसाको दुनियासे ॥
तो तू गोतम से कुन्दाचार्यसे महावीर पैदाकर ॥ ४ ॥
अगर है धर्मका कुछ जोश दिलमें जैनमत वालो ॥
तो न्यामत जैन कालिज की कोई तदबीर पैदाकर ॥ ५ ॥

३२

चाल—कहां लेजाऊं दिल दोनों जहां में इसकी मुशकिल है ॥

करमकी रेखमें भी मेख बुधिजन मार सकते हैं ॥
करम क्या हैं इन्हें पुरुषार्थसे संघार सकते हैं ॥ १ ॥
करम संचित बुरे गर हैं तो भाई इनका क्या डर है ॥
बुरे एमालनामे को भी हम सूधार सकते हैं ॥ २ ॥
करमसे तो बड़ा बलवान है पुरुषार्थ दुनिया में ॥
उदय भी गर करमका हो उसे भी टार सकते हैं ॥ ३ ॥
ज्ञान समयक्तसे चारित्रसे तप और संजमसे ॥
पाप दरियामें डूबको भी हम उद्धार सकते हैं ॥ ४ ॥
करमका डर जमा रक्खा है हाऊकी तरह यूंही ॥
इन्हें तो ध्यानके इक तीरसे भी मार सकते हैं ॥ ५ ॥
करें उद्यम तो सारी मुशकिलें आसान होजावें ॥
हां गर हिम्मत हारदें तो बिलाशक हार सकते हैं ॥ ६ ॥
काल लब्धि होनहार आलशी पुरुषों की बातें हैं ॥

हम इस पुरुषार्थ से किसमतकी रेखा टार सकते हैं ॥ ७ ॥
अगर हिम्मत करो और इम्तिहांमें पास होजावो ॥
तो कर्मों के पुराने सारे पर्चे फाड़ सकते हैं ॥ ८ ॥
करम सागरको करना पार न्यामत गर्चे मुशकिल है ॥
मगर जिनधर्म के चप्पू से नैय्या तार सकते हैं ॥ ९ ॥

३३

श्री विश्नुकुमार जी मुनिराजने हस्तनापुरके वनमें सातसौ मुनियों को आगमें जलने से बचाया और इस उपसर्ग निवारण की यादगारमें जो आज-तक सलूनो त्योहार मनाया जाता है इसका हाल इस भजनमें दिखलाया गया है ॥

चाल—कहां लेजाऊं दिल दोनो जहां में इसकी मुशकिल है ॥

फलकपर जिस घड़ी टूटा सितारा वनमें मिथलाके ॥
हिला नक्षत्र शर्वण एकदम गरदूं हिलाने को ॥ १ ॥
लखा मुनिराजने बेसाख्ता निकला ज़ुबांसे हा ! ॥
तो छुल्लकजीनेकी अर्दास सब कारण बतानेको ॥ २ ॥
मुनी बोले ज़ुलम दुनियामें ऐसा होने वाला है ॥
क़यामत होरही है बस समझ तय्यार आनेको ॥ ३ ॥
हस्तनापुरके वनमें सातसौ साधू जो आए हैं ॥
कमर बांधी है बलराजाने अग्नीमें जलानेको ॥ ४ ॥
श्री विश्नुकुमर मुनिराजको है विक्रिया ऋद्धी ॥
वही सामर्थ हैं इस वक्त ऋषियोंके बचानेको ॥ ५ ॥
सुना यह माजरा जिसदम श्री महाराज छुल्लकने ॥

उसीदम बनमें जा पहोंचे हक़ीक़त सब सुनानेको ॥ ६ ॥
ऋषी बिश्नुकुमर जीको सुनाया हाल जा सारा ॥
ऋषी घबरागए सुनकर हुवे तय्यार जानेको ॥ ७ ॥
तपोबलसे मुनीने जाके धारा रूप बामनका ॥
गए बलके दवारे बलको छल काबूमें लानेको ॥ ८ ॥
राज सब लेलिया बलका जब अपने बिक्रियाबलसे ॥
गए जल्दीसे बनमें आप ऋषियोंके बचानेको ॥ ९ ॥
अगन चारों तरफ़से लगचुकी थी वक्त नाजुक था ॥
ऋषी सब ध्यान में थे लीन कर्मों के जलानेको ॥ १० ॥
हस्तनापुर में मातम छारहा था सारे ब्याकुलथे ॥
दियाथा त्याग सबने ग़ममें पानी और खानेको ॥ ११ ॥
श्री बिश्नु कुमर ने बस उसी दम तप की शक्ती से ॥
नीर बरसा दिया बन में लगी आतिश बुझाने को ॥ १२ ॥
बचाकर सब मुनों को और धरम पर्भावना करके ॥
ऋषी पहुंचे गुरुके पास फिर से योग पाने को ॥ १३ ॥
शहर वालों ने भी ऋषियों को दे आहार ब्रत खोला ॥
सलूनो आज तक कायम है याद इसकी दिलाने को ॥ १४ ॥
न्यायमत एक वह भी वक्त था त्यागी मुनि भी तो ॥
सदा तय्यार थे औरों की बिपता के मिटाने को ॥ १५ ॥

३४

अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु का रण में जाने को तय्यारहोना और उसकी माता सुभद्रा का अभिमन्यु को जानेसे रोकना—अभिमन्यु का न मानना औररणमें चला जाना ॥

(माता व पुत्र के सवाल व जवाब)

चाल—कहां लेजाऊं दिल दोनो जहां में इसकी मुशकिल है ॥

सुनी जिस वक्त अभिमन्यु ने रण भेरी तो इक दम से ॥
ज़िरह बक्तर पहन के होगया तय्यार जाने को ॥ १ ॥
कहा माता ने अभिमन्यु ज़रा तू ठैर तो बेटा ॥
हुआ है यह तो बतलादे कहां तय्यार जाने को ॥ २ ॥
गए रण में पिता जब क्यों न की तूने खबर मुझको ॥
मैं तो उस वक्त भी माता जी था तय्यार जाने को ॥ ३
गए हैं सबके सब रणमें रहा है घरमें इक तूही ॥
भला तू भी हुवा है किस लिए तय्यार जाने को ॥ ४ ॥
लगाती किसलिये धब्बा तू मेरी बीरताई में ॥
फिकर क्या है मेरी माता हर इक आता है जानेको ॥ ५ ॥
न तेरी उम्र लड़नेकी न रण देखा कभी तूने ॥
अरे नादान कैसे होगया तय्यार जानेको ॥ ६ ॥
बताओ कौन सिखलाता है लड़ाना शेर बच्चोंको ॥
क्षत्री हर घड़ी रहते हैं यूं तय्यार जानेको ॥ ७ ॥
न्यायमत सीस अभिमन्यु झुका माताके चर्णों में ॥
उसी दम चलदिया घरसे वह था तय्यार जानेको ॥ ८

३५

भगवान महाबीर स्वामी की अस्तुति ॥

चाल— आपको चाहने वालों को भी पहिचान नहीं ॥

जय महाबीर है हिन्सा को हटाया तूने ॥
दयामय धर्मकी अज़मतको दिखाया तूने ॥ १ ॥

जगसे मिथ्यातका अंधेर हटाया तूने ॥
ज्ञानका दुनियामें परकाश कराया तूने ॥ २ ॥
तू न रागी है न द्वेषी नहीं क्रोधी मानी ॥
सारी दुनियाको हितोपदेश सुनाया तूने ॥ ३ ॥
जग अनादि है नहीं कोई भी करता हरता ॥
द्रव्य गुण सारे अनादि हैं बताया तूने ॥ ४ ॥
न्यायमत सीस झुकाता है तेरे चर्णों में ॥
धन्य है मोक्षके रस्ते में लगाया तूने ॥ ५ ॥

शुभम्

इति मूर्ति मंडन प्रकाश
(जैन भजन पुष्पांजली) समाप्तम् ॥

नोटिस

निम्न लिखित भाषा छन्द बद्ध चरित्र प्राचीन जैन पंडितोंने रचेथे जिनको अब संशोधन करके मोटे कागज़ पर मोटे अक्षरों में सर्व साधारणके हितार्थ छपवाया है सब भाइयोंको पढ़कर धर्म लाभ उठाना चाहिये-यह दोनो जैन शास्त्र स्त्री पुरुषोंके लिये बड़े उपयोगी हैं, इनकी कविता प्राचीन है और सुन्दर हैं ॥ दोनो शास्त्र जैन मंदिरों में पढ़ने योग्य हैं:—

(१) भविसदत्त चरित्रः—यह जैन शास्त्र श्रीमान् पंडित बनवारी लालजी जैनने सम्वत् १६६६ में कविता रूप चौपाई आदि भाषा में बनाया था जिसको कई प्रतियों द्वारा मिलान करके शुद्धता पूर्वक छपवाया है और कठिन शब्दोंका अर्थ भी प्रत्येक सुफे के नीचे लिखा गया है इसमें महाराज भविसदत्त और सती कमलश्री व तिलकासुन्दरी का पवित्र चरित्र भले प्रकार दर्शाया गया है। सजिल्द मूल्य २)

(२) धन कुमार चरित्रः—यह जैन शास्त्र श्रीमान् पंडित खुशहाल चन्द जी जैन ने कविता रूप चौपाई आदि भाषा में रचा था इसको भी भले प्रकार सशोधन करके छपवाया है इसमें श्रीमान् धनकुमार जी का जीवन चरित्र अच्छी तरह दिखाया गया है। सजिल्द मूल्य १।)

(३) नमोंकार मंत्रः—फूलदार बढ़िया मोटा कागज़ मू० ~)

पुस्तक मिलनेका पताः—

बा० न्यामतसिंह जैनी सेक्रेटरी डिस्टिरिक्ट बोर्ड हिसार।

मु० हिसार (जिला खास हिसार)

(पंजाब)